Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 1, January-2021, ISSN 2230-7540

पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर का अध्ययन

Rajesh Pandey[1]*, Prof.(Dr) Dharam vir Singh[2]

[1] Research Scholar, SunRise University Alwar (Rajasthan)

[2] Library and Information Science, SunRise University Alwar (Rajasthan)

सार - ***शैक्षणिक पुस्तकालयों के सामने आने वाली मुख्य चुनौतियां हैं, तकनीकी चुनौतियों में निधियों की कमी, निपुणता की कमी, प्रशिक्षण की कमी, पुस्तकालय प्रबंधन पर ब्याज की कमी, राष्ट्रीय सूचना नीति (एनआईपी) की कमी, बिजली की लैन ध् वैन की अनियमित आपूर्ति, कंप्यूटर और इंटरनेट लिंक का लगातार टूटना। वर्तमान अध्ययन लखनऊ जिलें के विश्वविद्यालय के अनुसंधान विद्वानों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइटों के उपयोग को निर्धारित करने के लिए आयोजित किया जाता है। अध्ययन से पता चलता है कि सभी शोध विद्वान सोशल नेटवर्किंग साइट्स और एएसएनएस से अवगत हैं। अधिकांश अनुसंधान विद्वानों ने अपने शोध कार्यों में एएसएनएस के महत्व को इंगित किया। कुछ ASNSs जैसे कि Zotero Mendeley ResearchGate Academia-edu आदि अपने शोध कार्य के लिए बहुत उपयोगी हैं। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि एसएनएस और एएसएनएस के प्रभावी उपयोग के लिए जागरूकता कार्यक्रम ध् प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता है।***

कुंजीशब्द- पुस्तकालय, प्रबंधन, सॉफ्टवेयर

----------X----------

1. प्रस्तावना

वर्तमान नॉलेज सोसायटी मुख्य रूप से तकनीकी रूप से संचालित है जिसने मानव जीवन के सभी पहलुओं में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। चूँकि मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं, वे हमेशा समुदायों में रहते थे और पारस्परिक संबंध (अहरोनी, 2015) में बहुत विश्वास करते हैं। इंटरनेट ने इस तरह के सामाजिक इंटरैक्शन को एक के समुदाय (अलकंडी और अल-सुकरी 2013) के पारंपरिक स्थल से आगे जाने में सक्षम किया है। इंटरनेट निस्संदेह, दुनिया आश्चर्य नेटवर्क सूरज के तहत लगभग सभी विषयों पर जानकारी ले रहा है।

आज हर कोई इंटरनेट पर होना चाहता है क्योंकि सूचनाओं का खजाना है, जिसका आदान-प्रदान होता है। इसे सूचना सुपरहाइवे के रूप में जाना जाता है। लोग इंटरनेट पर सभी सामाजिक संदर्भों में कई प्रकार की सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। विभिन्न पहलुओं ध् मुद्दों पर किए गए शोध के परिणाम इंटरनेट के माध्यम से लगातार प्रसारित होते हैं। इंटरनेट ने आभासी वातावरण के लिए जन्म दिया है जिसके माध्यम से किसी भी जानकारी को फिंगर टिप्स पर एक्सेस किया जा सकता है। परिणामस्वरूप, तकनीक-प्रेमी उपयोगकर्ताओं की सेवा के लिए वर्चुअल लाइब्रेरी स्थापित की गई हैं इसके अलावा पुस्तकालयों के विज्ञान के पहले कानून को पूरा करना पुस्तकें उपयोग के लिए हैं (नायर, 1999) बताते हैं कि आज के पुस्तकालयों को इंटरनेट के माध्यम से भी एक्सेस किया जा सकता है।

2. प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया

लोगों को शक्ति वापस। वर्तमान समाज ने सभी मामलों में एक जबरदस्त बदलाव देखा है यह शैक्षिक संस्थान आर एंड डी इंस्टीट्यूशंस बिजनेस एंटरप्राइजेज या लाइब्रेरी और सूचना केंद्र हैं जो इन विकासों के अपवाद नहीं हैं।सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करना। फेसबुक, ट्विटर, लिंक्डइन, गूगलपल्स, यू ट्यूब आदि रोजमर्रा के संचार का लोकप्रिय और अभिन्न अंग बन गए हैं।प्रौद्योगिकी के जानकार उपयोगकर्ताओं ने इन संचार साधनों को इंसान की छठी बुनियादी जरूरत माना है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और सोशल नेटवर्किंग साइट्स का इस्तेमाल परस्पर रूप से किया जाता है, डेविस प्प्प् एट अल के अनुसार। (2012) सामाजिक

www.ignited.in

मीडिया प्रौद्योगिकी शब्द वेब आधारित और मोबाइल अनुप्रयोगों को संदर्भित करता है जो व्यक्तियों और संगठनों को मल्टी-वे संचार के माध्यम से डिजिटल वातावरण में नए उपयोगकर्ता-उत्पन्न या मौजूदा सामग्री बनाने, संलग्न करने और साझा करने की अनुमति देता है। सोशल नेटवर्किंग साइटें ब्लॉग, फोटो, वीडियो, ऑडियो, फाइलें, स्थिति और कई अन्य सहित सामग्री के विभिन्न रूपों के निर्माण और साझा करने की सुविधा प्रदान करती हैं। ये ैछै तकनीक की वर्तमान प्रवृत्ति और संचार की दुनिया के बदलते चेहरे के साथ लोगों को विकसित करने में मदद कर रहे हैं(मधुसूदन, 2012)। एसएनएस प्रोफाइल आधारित वेबसाइटें हैं जो उपयोगकर्ताओं को सदस्यों के साथ सामाजिक कनेक्शनों की सूचियों को देखने, जाने और साझा करने की अनुमति देती हैं (बॉयड और एलिसन, 2008)।

3. वैचारिक विवरण

पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर-

एक सॉफ्टवेयर प्रोग्राम का एक सेट है जो कंप्यूटर में वांछित संचालन करने के लिए कंप्यूटर को लिखने या विकसित करने के लिए विकसित किया जाता है।

मशीन या मशीनों के कार्य करने की प्रक्रियाएं उन कार्यों को पूरा करती हैं जो मनुष्यों द्वारा पूर्ण या आंशिक रूप से किए जाते हैं। जैसा कि यहां प्रयोग किया जाता है, एक मशीन किसी निर्जीव विद्युत उपकरण जैसे रोबोट या कंप्यूटर को संदर्भित करती है।" प्रौद्योगिकी के रूप में, विनिर्माण से लेकर लिपिकीय और प्रशासनिक कार्यों तक, लगभग किसी भी मानवीय प्रयास में स्वचालन लागू किया जा सकता है।

किसी भी स्वचालित प्रक्रिया के मूल घटक एक शक्ति स्रोत, एक प्रतिक्रिया नियंत्रण तंत्र और एक प्रोग्राम कमांड संरचना है।

परिभाषाएं

1. उपकरण का स्वचालित संचालन या नियंत्रण , एक प्रक्रिया, या एक प्रणाली।
2. स्वचालित संचालन या नियंत्रण को प्राप्त करने के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक और उपकरण।
3. स्वचालित रूप से नियंत्रित या संचालित होने की स्थिति।
4. स्वचालन के पर्यायवाची शब्दों में से कुछ हैं मशीनीकरण, कम्प्यूटरीकरण, साइबरकरण, रोबोटीकरण, औद्योगीकरण, मोटरकरण और आत्म-विनियमन। (गल्होत्रा, एमके २०० ,, पृष्ठ २३३)

एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर -

एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर एक ऐसा सॉफ्टवेयर है जिसे विकसित या लिखा जाता है, जो उपयोगकर्ताओं के विशेष समूह द्वारा आवश्यक विशिष्ट कार्यों को पूरा करने में सक्षम बनाता है। जैसे। SOUL] ई- ग्रन्थालय, आदि।

लाइब्रेरी ऑटोमेशन

लाइब्रेरी ऑटोमेशन से तात्पर्य कंप्यूटर के उपयोग से संबंधित परिधीय माध्यमों जैसे डिस्क, ऑप्टिकल मीडिया, कंप्यूटर नेटवर्क आदि से है और सभी प्रकार के पुस्तकालय कार्यों और कार्यों के प्रदर्शन में कंप्यूटर आधारित उत्पादों और सेवाओं का उपयोग है।

कंप्यूटर और संबंधित तकनीकों का उपयोग सही व्यक्तिगत तरीके से सही समय पर सही पाठक को सही जानकारी प्रदान करने का प्रावधान करता है। पुस्तकालय गतिविधियों का स्वचालन बहुत कुशलता से, तेजी से, प्रभावी रूप से, पर्याप्त और आर्थिक रूप से सेवाएं प्रदान करता है। आधुनिक पुस्तकालय और सूचना केंद्र एक मुक्त संचार की सुविधा प्रदान करते हैं क्योंकि सूचना तक पहुंच ग्राहक का मौलिक अधिकार बन गया है। लाइब्रेरी और सूचना सेवाओं की संगणक और उनके संबद्ध परिधीय माध्यमों की भूमिका का उपयोग पुस्तकालय और सूचना सेवाओं के अधिग्रहण, भंडारण, हेरफेर, प्रसंस्करण और मरम्मत, प्रसार, प्रसारण के लिए किया जा रहा है, जिससे पुस्तकालय और सूचना केंद्रों के उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होता है । (भारद्वाज - शुक्ला 2000)

पुस्तकालय स्वचालन के क्षेत्र

इब्रेरी ऑटोमेशन सामान्य शब्द है जिसका उपयोग स्थान, अधिग्रहण, भंडारण, अपडेशन, हेरफेर, प्रोसेसिंग, रीपैकेजिंग या पुनरू पेश, प्रसार या प्रसारण या संचार से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को दर्शाने के लिए किया जाता है, जो लाइब्रेरी और सूचना केंद्रों के उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करता है।

यह पुस्तकालय पेशेवर कर्मचारियों की गति, उत्पादकता, पर्याप्तता और दक्षता को बढ़ाता है और कुछ नियमित, दोहराए जाने वाले और लिपिक कार्यों जैसे फाइलिंग, सॉर्टिंग, टाइपिंग, दोहराव की जाँच आदि से बचने के लिए जनशक्ति

www.ignited.in

को बचाता है, जिस पर हम तकनीकी के लिए महँगी व्यावसायिक शक्ति का संरक्षण कर सकते हैं। सेवा श्और पाठकों की सेवा। लाइब्रेरी ऑटोमेशन की मुख्य गतिविधियाँ और सेवाएँ नीचे दी गई हैं।

- सूचना संसाधन भवन: सीरियल नियंत्रण
- अधिग्रहण' डाटा एंट्री
- वर्गीकरण और सूचीकरण: परिसंचरण नियंत्रण
- प्रलेखन और संबद्ध सेवाएँ: सूचना पुनर्प्राप्ति
- संचार नेटवर्क 'सूचना सेवा: (मंजूनाथ 1998)

भारत में पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर

पुस्तकालयों के बीच प्रभावी संसाधन साझा करने के लिए पुस्तकालयों का स्वचालन और उनकी नेटवर्किंग बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। अच्छे हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर की आवश्यकता होती है, जो पुस्तकालयों को अपने दिन-प्रतिदिन के कार्यों को स्वचालित करने के लिए उपयोग कर सकते हैं, उनके होल्डिंग्स के डेटाबेस बना सकते हैं और उपयोगकर्ताओं के लिए ऑनलाइन पहुंच प्रदान कर सकते हैं। भारत में इन गतिविधियों के लिए कई सॉफ्टवेयर पैकेज उपलब्ध हैं (यानी, LIBSYS] LIBMAN] SLIM] LIBRARIAN आदि) और कई पुस्तकालयों ने अपने विभिन्न कार्यों को स्वचालित कर दिया है। इनमें से कुछ एकीकृत पैकेज हैं जो नेटवर्क संसाधन साझाकरण, ऑनलाइन ओपैक जैसे कई कार्यों को कवर करते हैं, इंटरनेट आदि के माध्यम से कैस और एसडीआई सेवाएं प्रदान करते हैं, जबकि अन्य विशिष्ट कैटलॉग और सूचना के प्रबंधन सहित कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. पुस्तकालय स्वचालन के क्षेत्र का अध्ययन
3. प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का अध्ययन

4. अनुसन्धान क्रियाविधि

अनुसंधान डिजाइन

अनुसंधान डिजाइन एक योजना, संरचना और जांच की रणनीति है, ताकि शोध के सवालों का जवाब प्राप्त किया जा सके और विचरण को नियंत्रित किया जा सके। इस वर्तमान अध्ययन ने मुख्य रूप से दो पहलुओं, गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान का आयोजन किया है। चूंकि डेटा संग्रह का एक भी तरीका विषय के अध्ययन और जांच के लिए उपयुक्त नहीं है। इसलिए संबंधित तथ्यों, आंकड़ों और आंकड़ों को एकत्र करने के लिए विभिन्न विधि के संयोजन का उपयोग किया जा रहा है। मुख्य रूप से उपयोग की जाने वाली विधियाँ संबंधित लोगों के साथ संरचित प्रश्नावली, सर्वेक्षण और प्रत्यक्ष साक्षात्कार हैं। कुछ मामलों में, टेलीफोन संपर्क के माध्यम से डेटा एकत्र किया जाता है, इसी तरह, संबंधित अधिकारियों के साथ व्यक्तिगत संपर्क (मुख्य रूप से लाइब्रेरियन ध् सूचना अधिकारी और सॉफ्टवेयर बिल्डरों और सॉफ्टवेयर वितरकों का भी)।

अनुसंधान प्रक्रिया का मॉडल

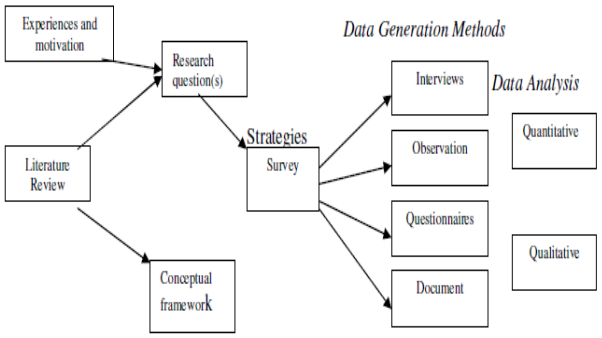

जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या पुस्तकालय स्वचालन के लिए कम्प्यूटरीकृत कंप्यूटर का इस्तेमाल करने वाले पुस्तकालय थे। अनुसंधान विशेष रूप से विश्वविद्यालय और कॉलेज पुस्तकालयों पर केंद्रित था। इस अध्ययन में जनसंख्या एक व्यक्ति नहीं, बल्कि पुस्तकालय जो महात्मा गाँधी इलाहाबाद ग्रामोदय विस्वाविदयालय प्टप्(एमिकेबल नॉलेज सॉल्यूशन) विश्वविद्यालय है।

सैंपलिंग

विश्वविद्यालय, संघटक परिसरों, संबद्ध महाविद्यालयों और इलाहाबाद और लखनऊ में स्थित पुस्तकालयों को स्वचालन, वर्तमान अध्ययन और जांच के लिए नमूना संस्थानों के रूप में चुना जाता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि संबंधित लाइब्रेरी में किस सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया है और इसकी उपयुक्तता के लिए सॉफ्टवेयर का मूल्यांकन करें। डेटा एकत्र करने के लिए चयनित पुस्तकालयों में केवल तीस प्रश्नावली वितरित की गई हैं और सभी एकत्र किए गए थे।

डेटा के स्रोत

प्राथमिक और माध्यमिक डेटा एकत्र किया गया है। प्राथमिक डेटा में लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर पर मूल दस्तावेज और लाइब्रेरियन के साथ साक्षात्कार शामिल हैं। मूल दस्तावेज में वार्षिक और

www.ignited.in

विशेष सम्मेलन, व्यापार साहित्य और प्रासंगिक वर्ल्ड वाइड वेब साइट शामिल हैं।माध्यमिक डेटा में रिपोर्ट, मोनोग्राफ, शोध प्रबंध, किताबें, निर्देशिकाएं, और विश्वकोश मैनुअल, पत्रक आदि शामिल थे। पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर पैकेजों के मूल्यांकन और तुलना पर प्रासंगिक सैद्धांतिक कार्यों को भी परामर्श दिया गया था। संबंधित पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों का सर्वेक्षण किया गया।

5. डाटा विश्लेषण

डेटा विश्लेषण और प्रस्तुति

विश्वविद्यालय या अन्य शैक्षणिक पुस्तकालयों का स्वचालन गुणवत्ता सेवा प्रदान करने और जगह और समय के दौरान काटने वाले विभिन्न सूचना स्रोतों तक आसान पहुंच प्रदान करने में एक लंबा रास्ता तय कर चुका है। आईटी को अपनाने से न केवल विद्वानों के समय की बचत हुई है बल्कि इसने सूचना स्रोतों के पहुंच के आधार को भी विशाल किया है।

1- लखनऊ , विश्वविद्यालय में चयनित शैक्षणिक पुस्तकालयों में उपयोग किए जा रहे पुस्तकालय स्वचालन सॉफ्टवेयर पैकेजों को अध्ययन के लिए लिया गया है। डेटा स्वचालित शैक्षणिक पुस्तकालयों से एकत्र किए गए हैं और यह भी देखा गया है कि पुस्तकालय जो स्वचालित नहीं थे या जो व्यावसायिक रूप से उपलब्ध सॉफ्टवेयर का उपयोग नहीं करते हैं, वे अध्ययन में प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

2- चेकलिस्ट के आधार पर और लाइब्रेरियन और सूचना पेशेवरों को वितरित प्रश्नावली के अनुसार डेटा एकत्र किया गया है। तुलनात्मक विश्लेषण के लिए केवल दो सॉफ्टवेयर को ध्यान में रखा गया है। वे इस प्रकार हैं

3- विश्वविद्यालय पुस्तकालय के लिए सॉफ्टवेयर (SOUL)

4. ई - ग्रंथालय

अध्ययन पुस्तकालय सॉफ्टवेयर के मूल्यांकन के साथ सात शैक्षणिक पुस्तकालयों का पालन के रूप में उपयोग करता है :

तालिका 1

क्रमांक	विश्वविद्यालय का नाम	संक्षिप्त	पता
1	लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	LVL	लखनऊ
2	इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद	IVI	इलाहाबाद

अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए उपरोक्त मानदंड पर प्रश्नावली तैयार की गई है। डेटा विश्लेषण और प्रस्तुति लाइब्रेरियन से प्राप्त प्रतिक्रिया पर आधारित है। इसके अलावा, इस तुलनात्मक अध्ययन में संबंधित पुस्तकालय सॉफ्टवेयर पैकेज और व्यक्तिगत साक्षात्कार पर लिखे गए साहित्य का उपयोग किया गया है।

तालिका 2 अध्ययन के चयनित पुस्तकालयों का संग्रह

क्रमांक	विश्वविद्यालय का नाम	पुस्तकें	संसाधन पत्रिका (शीर्षक)
1	लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	313000	500
2	इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद	67000	245

विवरण

स्वचालन की स्थिति

अधिग्रहण, कैटलॉगिंग, सर्कुलेशन कंट्रोल, सीरियल कंट्रोल और रिपोर्ट जनरेशन आदि जैसे संचालन को ध्यान में रखते हुए पूरे लाइब्रेरी हाउस के कम्प्यूटरीकरण को लाइब्रेरी ऑटोमेशन के रूप में जाना जाता है। सूचना विस्फोट के इस युग में स्वचालन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और पुस्तकालय स्वचालन में पुस्तकालय सॉफ्टवेयर बहुत महत्वपूर्ण है। यद्यपि लाइब्रेरियन द्वारा इसके महत्व को जानते हुए भी, वे विभिन्न कारणों से अपने पुस्तकालय का कम्प्यूटरीकरण करने में सक्षम नहीं हैं। हालाँकि कुछ पुस्तकालयों ने या तो पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत या आंशिक रूप से कम्प्यूटरीकृत किया है। निम्नलिखित पुस्तकालयों ने

www.ignited.in

अपने पुस्तकालयों को स्वचालित करने के लिए विभिन्न वाणिज्यिक सॉफ्टवेयर पैकेजों का उपयोग किया है

6. उपसंहार

विशेष सॉफ्टवेयर के चयन के लिए, सॉफ्टवेयर चयन टीम को प्रौद्योगिकी सेवाओं और कार्यों की सुरक्षा और प्रमाणीकरण के क्षेत्र में अधिक से अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है और सॉफ्टवेयर के प्रशिक्षण और दस्तावेजीकरण के साथ-साथ दीर्घकालिक लागत और रखरखाव के विचार भी विक्रेता व्यवहार्यता को जारी करते हैं। अध्ययन तुलनात्मक रूप से इलाहाबाद लखनऊ विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में उपयोग किए जाने वाले वाणिज्यिक सॉफ्टवेयर (SOUL-03] E&GRANTHALAY) का विश्लेषण करता है। वर्तमान शताब्दी में सफल होने के लिए, पुस्तकालयों को अधिक सक्रिय और अधिक ग्राहक सेवा उन्मुख होना होगा। शैक्षणिक पुस्तकालयों के सामने आने वाली मुख्य चुनौतियां हैं, तकनीकी चुनौतियों में निधियों की कमी, निपुणता की कमी, प्रशिक्षण की कमी, पुस्तकालय प्रबंधन पर ब्याज की कमी, राष्ट्रीय सूचना नीति (एनआईपी) की कमी, बिजली की लैन ध् वैन की अनियमित आपूर्ति, कंप्यूटर और इंटरनेट लिंक का लगातार टूटना। वर्तमान अध्ययन लखनऊ जिलें के विश्वविद्यालय के अनुसंधान विद्वानों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइटों के उपयोग को निर्धारित करने के लिए आयोजित किया जाता है। अध्ययन से पता चलता है कि सभी शोध विद्वान सोशल नेटवर्किंग साइट्स और एएसएनएस से अवगत हैं। अधिकांश अनुसंधान विद्वानों ने अपने शोध कार्यों में एएसएनएस के महत्व को इंगित किया। कुछ ASNSs जैसे कि Zotero Mendeley ResearchGate Academia-edu आदि अपने शोध कार्य के लिए बहुत उपयोगी हैं। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि एसएनएस और एएसएनएस के प्रभावी उपयोग के लिए जागरूकता कार्यक्रम ध् प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता है। इस तरह के उपयोगकर्ताओं के अध्ययन से लाइब्रेरियन को उपयोगकर्ताओं की दालों को जानने और उनकी आवश्यकताओं और आवश्यकताओं के अनुसार सेवाएं प्रदान करने में मदद मिलेगी।

7. सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. हडबे, जेड।, ओवोलबी, वाई, और म्लाम्बो, ई0 (2016) दो अफ्रीकी विश्वविद्यालयों में स्नातक छात्रों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइटों का उपयोग पुस्तकालयों में गुणात्मक और मात्रात्मक तरीके, 5, 743-749।

2. हॉल, एच (2011) सामाजिक मीडिया के वातावरण में संबंध और भूमिका परिवर्तन इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी, 29 (4), 421 - 428।

3. हेंचिनल, वीवी, और हेंचिनल बीवी (2008) पुस्तकालयों पर इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकियों का प्रभावरू मुंबई में शैक्षणिक पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों के संदर्भ में एक अध्ययन। पलरू लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस, 2 (4), 590 की एक पत्रिका।

4. हेलो, एएम, और अबराहिम, एनजेड (2014) मलेशिया में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर सामाजिक नेटवर्किंग साइटों का प्रभाव इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स स्टडीज, 5 (2), 247-254।

5. हसनैन, एच0, नसरीन, ए0, और एजाज, एच0 (2015) विश्वविद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर सोशल मीडिया के उपयोग का प्रभाव, दूसरा अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान प्रबंधन और नवाचार सम्मेलन ¼IRMIC 2015½] लंगकावी, 26-27 अगस्त 2015 पीपी। 1-12।

6. हिरेमठ, बीके और किन्चनकवर, प्राग (2016) वेब 1.0, वेब 2.0 और वेब 3.0 का एक परिवर्तन एक तुलनात्मक अध्ययन इंपीरियल जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च (प्श्रप्त्), 2 (4), 705-710।

7. हिशाम, एनबी (2017) लाइब्रेरी सर्विसेज का शोधन ट्विटर द्वारा प्रभावित है रिसर्च हब, 3 (4), 12-21।

8. होम्स, के0, मैकलीन, आर0, और ग्रीन, जी0 (2012) भविष्य को ऑनलाइन बनाना स्वतंत्र शिल्पकार सोशल मीडिया और वेब तकनीकों को कैसे अपनाते हैं, इसका एक अध्ययन सिस्टम और सूचना प्रौद्योगिकी जर्नल, 14 (2), 142-154।

9. हुसैन, एस0, और नाजिम, एम0 (2015) भारतीय शैक्षणिक पुस्तकालयों में विभिन्न सूचना और संचार तकनीकों का उपयोग। लाइब्रेरी रिव्यू, 64 (1ध्2), 135-153।

10. हुसैन, एम, और ऋण, एफ.ए (2017) पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग

www.ignited.in

डिजिटल लाइब्रेरी सेवाओं के इंटरनेशनल जर्नल, 7 (1) 72-84।

11. Iordache] DD] &Lamanauskas] V ¼2013½ सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटों के उपयोग की खोज रोमानियन यूनिवर्सिटिट यू छात्रों की धारणाएं और राय इंफोर्मेटिक इकोनाॅजी, 17 (4), 18-25।

12. इस्लाम, एमएम, और हबीबा, यू0 (2015) बांग्लादेश में लाइब्रेरी और सूचना सेवाओं के विपणन में सोशल मीडिया का उपयोग। क्म्ैप्क्ब् जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 35 (4), 299-303।

13. जोशी, ए0, मुकाती.0, पी0, और नायडू, जीएचएस (2013) इंदौर शहर के सरकारी कॉलेजों के छात्रों में इंटरनेट जागरूकता एक अध्ययन इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस, 3 (3), 489-500।

14. कादली, जेएच, कुंभार, बीडी, और कानमादी, एस0 (2010) इंटरनेट के उपयोग पर छात्रों का दृष्टिकोण एक केस स्टडी सूचना अध्ययन, 16 (2), 121-130।

15. कानूनगो, एनटी (2007) सामाजिक वैज्ञानिकों के विद्वतापूर्ण संचार में इंटरनेट का उपयोगरू इग्नू का एक केस अध्ययन। एनल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन स्टडीज, 54, 7-1 8।

Corresponding Author

Rajesh Pandey*

Research Scholar, SunRise University Alwar (Rajasthan)